Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-13, Issue-1, June 2019
Impact Factor: 4.081
www.researchguru.net

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर और बौद्ध धर्म

डॉ. गेलजी भाटिया
आसि. प्रोफेसर –हिन्दी, गूजरात विद्यापीठ ,रांधेजा, मोबा. – 9427423746
geljibhai.bhatiya@gmail.com

abstract

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के जीवन में अनेकों का योगदान रहा है। पर जब दलित समाज के अस्तित्व, सम्मान का संग्राम हुआ तभी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर को बौद्ध धर्म ने बहुमूल्य सहयोग किया इतिहास इसका साक्षी है। इसीलिए तो डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर और बौद्ध धर्म भारत में एक सिक्के की दो पहलू के समान प्रचलित है। मेरा इस शोध पत्र में यह उद्देश्य रहा है कि एक भारतीय संविधान निर्माता ऐसे सर्वोदय शिक्षित, प्रबुद्ध व्यक्तित्व को जिन्होंने आकर्षित किया। ऐसा कौन सा तत्व है जो आदमी शांति, मुक्ति दिला सकता है। सामाजिक भेदभाव मिटाने के लिए भी भगवान बुद्ध प्रयास करते हुए कहा था कि लोगों का परिचय जन्म के आधार पर नहीं कर्म के आधार पर होना चाहिए।

key word

दलितों के देव, दलितोद्धारक, वर्णो के बंधन, महायान, हीनयान, धार्मिक पाखंडवाद , सम्यक कर्म, सम्यक दृष्टि, करूणाशील और मैत्री

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर को कौन ऐसा भारतीय है जो नहीं जानते ? भारत की सीमाओं को लांधकर विश्व विभूति पद से कम नहीं हैं इसका एक मात्र कारन है जिन्होंने दलितों, शोषितों, पीड़ितों, निराधार जो हजारों साल से दु:ख झेलते-सहते रहे उन लोगों को अपना हक्क दिलाकर उधार किया। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरने कोई ऐसी निम्न सोच से अपना जीवन नहीं जीया है। बाबासाहेबने विश्वजन को शिक्षा, संगठन और संघर्ष का संदेश देकर पुनरूद्धार, जीर्णोद्धार किया है। इसीलिए उन्हें दलितों के देव, दलितों के मसीहा, दलितोद्धारक, समाज सुधारक,सत्याग्रही, धर्मशास्त्रज्ञ, तत्वज्ञ, कायदे पंडित,बौद्धधर्म पुरूत्थानी,विद्याव्यासंगी, राष्ट्रीवादी, समाज शास्त्रज्ञ,मानववंश शास्त्रज्ञ,इतिहासकार,इत्यादि अनेक नामों से विभूषित किये गए। भारत रत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने अपने एवं दलित समाज के जीवन संघर्ष को देखा- झेला और सहा भी है परंतु हार मानने वालों में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरजी थे । ऐसे आत्म विश्वासी, आत्मसम्मानी, सच्चे सत्याग्रही, विचारवंत दृष्टा क्रांतिकारी व्यक्तित्व बाबासाहब विश्वजन के पथ प्रदर्शक रहें और रहेंगे। महाभारत के महासंग्राम में अर्जुन को श्री कृष्ण ने मायूस नहीं होने दिया और जीत का गौरव दिलाया। इस तरह इस इन्सान के संघर्ष ने करोड़ो लोगों का सपना पूरा किया । दलितों पीड़ितों के जीवन में एक नया प्राण संचार करके मानव सम्मान दिलाया । इतिहास साक्षी है जब दलित

समाज के अस्तित्व सम्मान का संग्राम हुआ तभी डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर को बौद्ध धर्म ने अपना धम्म निभाया । इसीलिए तो डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर और बौद्ध धर्म भारत में एक सिक्के की दो पहलू के समान प्रचलित है। मेरे इस शोध पत्र का यह उद्देश्य रहा है कि एक भारतीय संविधान निर्माता ऐसे सर्वोदय शिक्षित, प्रबुद्ध व्यक्तित्व, एवं घटना तजज्ञ डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर को जिन्होंने भी आकर्षित किया, उसमें कौन- सा ऐसा सत्य है जो संपूर्ण मानव समुदाय को शांति, मुक्ति दिला सकतें है। मेरे इस शोध-कार्य से अन्य शोधार्थी आगे संशोधन करना चाहे तो धर्म, संप्रदाय का मूल मार्ग और उसकी व्याप्ति तथा वैश्विक शांति में धर्म की भूमिका एवं डॉ. आंबेडकर के विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता इत्यादि अनेक विषय पर संशोधन कर सकते है। मैंने अपने इस आलेख में उपर्युक्त बिंदु को उजागर करने का एक लघु प्रयास किया है।

भारत रत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का परिचय

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर व्यवस्थावादी, स्थितिवादी महापुरुष नहीं थे। वे समाज परिवर्तनवादी, सामाजिक, सांस्कृतिक क्रांतिकारी महापुरुष थे। उन्होंने अपना सारा जीवन दांव पर लगाकर अनेक मिशन को संभव कर दिखाया । उन्हीं की प्रेरणा से, प्रयासों से विचारों से दलितों के जीवन सच्चा सुर्योदय हुआ। अपने हक्क के लिए अन्याय से लड़ते समय अगर आपकी मौत हो जाय तो आनेवाली पीढ़ीया उसका बदला अवश्य लेगी। पर यदि आप सहन करते-करते मर गए तो आनेवाली पीढ़ीया भी गुलाम बनी रहेगी । ऐसा संदेश देनेवाले महामानव डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का जन्म मध्यप्रदेश में 14 अप्रैल, 1891 इ.स. को रत्नागिरि जिले के महु नामक गांव में हुआ । उनके पिताजी का नाम रामजी सकपाल, माताजी का नाम भीमाबाई था। वे महार जाति के थे जो अछूत जाति समझी जाती थी। उनके पिताजी अंग्रेजी सेना के स्कूल में सूबेदार कहलाते थे। सैनिक पद के अनुसार वे ग्रेनीडियर रेजीमेंट में सुबेदार कहलाते थे। वे मूलत: बम्बई के पास दपोली नामक गाँव के निवासी थे।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जब छह साल के थे तभी उनकी माता का निधन हो गया था उनके पिताने दूसरा विवाह किया और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की देख-भाल उनकी अपंग बुआ ने किया। माता का नाम भीमाबाई था इसलिए माने अपने बेटे का नाम भीम रखा। भीमराव की 17 वर्ष की उम्र में शादी हो गयी थी। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उनके पिता की देख रेख में सतारा में हुई। बाद में पिताजी ने अपने परिवार को बम्बई ले आए और आगे की पढाई बम्बई में हुई। 1907 में मैट्रिक की परीक्षा पास की कृष्णजी केलुसकर से अनुरोध पर बडौदा नरेश श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड़ ने उच्च शिक्षा के लिए डॉ. बाबासाहेब आंबेड़कर को प्रतिमाह 20 रुपए की छात्रवृति दी। 1912 में उन्होंने बी.ए. की परीक्षा पास की। 1913 ई को उनके पिताजी का देहावसान हो गया। बडौदा नरेश सजायीराव गायकवाड़ ने उनको उच्च अभ्यास हेतु छात्रवृत्ति देकर अमेरिका भेजा। परंतु शर्त यह रखी कि पढ़ाई के बाद लौटकर उन्हें 10 साल तक बडौदा नरेश के यहाँ नौकरी करनी होंगी। 1915 में उन्होंने कोलम्बिया

विश्व विद्यालय से एम.ए. किया 1961 में पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। 1917 में बडौदा नरेश के कहने पर बडौदा आ गए वहाँ सैनिक सचिव पर कार्य शुरु किया। 1920 में फिर लंदन गए और अधूरी शिक्षा पूरी की। परंतु बड़ौदा नौकरी करते समय उन्हें सवर्णो से तिरस्कार मिला अत: 1917 ईसवी. में बम्बई के गवर्नर ने विधान परिषद के पद लिए मनोनित किया गया वे 1937 तक बम्बई विद्या सभा के सदस्य रहें। हिंदुओं के धर्म ग्रंथों में 'मनु स्मृति' के विरोधी रहें। उनके मतानुसार इसी ग्रंथ में हिंदुओं को वर्णो में विभाजित किया है। दलितों को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कई योजनाए बनाई 1946 ईसवी में भारत की संविधान सभा के सदस्य चुने गए। 19 दिसम्बर 1946 को संविधान सभा की पहली बैठक हुई जिसमें डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को संविधान सभा का स्वतंत्रता मिलने के बाद 15 अगस्त 1947 ईसवी को भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर स्वतंत्र भारत के प्रथम विधि-मंत्री बनाए गये। 29 अगस्त, 1947 ई को उन्हें भारतीय संविधान की प्रारूप समिति का अध्यक्ष चुना गया। विश्व के विभिन्न संविधानों का अध्ययन करके संविधान का मसौदा 4 नवम्बर 1948 को समापन किया और कहा "यह संविधान प्रत्यक्ष व्यवहार में लाने योग्य है। यह लचीला है, साथ ही शांति के दिनों में युद्ध काल में देश को एकता के सूत्र में बाँधे रखने के लिए अत्यंत प्रभावशाली और सक्षम है। यदि संविधान का सही तरीके से अनुकरण नहीं हो पाया तो यही कहना होगा की दोष संविधान का नहीं है, इन्सान में बसे अवगुणों का है।" इस संविधान को संविधान सभा ने देश में बड़े आदर के साथ स्वीकार किया। भारत के संविधान निर्माता, समाज सुधारक डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर को 5 दिसम्बर,1956 ईसवी को निधन हो गया देश के प्रति की गई सेवाओं से प्रभावित होकर भारत सरकारने 1990 ईसवी को उन्हें देश का सर्वोच्च सम्मान "भारत रत्न" सम्मान से विभूषित किया।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने दिन-रात एक करके विश्व धर्म का अध्ययन किया और अनेक ग्रंथों से ज्ञान व शिक्षा अर्जित कर हमारी भारतीय व्यवस्था को सुगठित किया। ऐसे संविधान के रचयिता को भी हिंदु धर्मावलंबीयों ने परेशान करने की एक भी कसर छोड़ी नहीं । ड़ॉ. बाबा साहब आंबेडकर ने सभी को आगाह करते हुए यह भी कहा कि जब तक संविधान जिंदा तब तक तुम जिंदा हो ,जिस दिन संविधान खत्म हुआ उस दिन विरोधी तुम्हे खत्म कर देंगे । देश के लिए करने बावजूद हिंदूधर्म के गलत रिवाजों से, और दलितों की पशु से भी बहतर जिंदगी से तंग आकर मध्यम मार्ग धर्म परिवर्तन का लिया। बौद्ध धर्म का अंगीकार से पहले कई धर्म ग्रंथो का अध्ययन कर चूके थे। परंतु बौद्ध धर्म एक ऐसा धर्म है जो पाखंड से दूर और सही मायने में सच्चा मानव धर्म है। इसके साथ साथ हिन्दू धर्म से अगर कोई नजदिक का धर्म हो तो यह बौध्ध धर्म है। इतनी यातनाओं,विरोध को झेलने के बावजूद हिंदू धर्म भला किया। उसी को लक्ष्य मानकर आगे बढ़े।

बौद्ध धर्म का परिचय :-

बौद्धधर्म की जन्मभूमि भारत देश है। इसका प्रचार-प्रसार का कार्य भारत में ही हुआ है। बौद्ध धर्म का इतिहास करीबन ढाई-तीन हजार साल का रहा है। बौद्ध-धर्म का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण परिचय यह रहा है कि इस धर्म ने जाति की, भाषा की और वर्णो के बंधनो की सीमाओं को तोड़ा है। इसके साथ-साथ संस्कृति वंश की गलत मान्यताओं और धारणाओं को भी अपनी कार्य सीमाओं में आने नहीं दिया। इसलिए बौद्ध धम्म विश्व में फैला है।

बौद्धधर्म भारत की श्रमण परंपरा से निकला धर्म और महान दर्शन रहा है। ईसा पूर्व की 6 वीं (छठवीं) शताब्दी में बौद्धधर्म की स्थापना हुई। स्थापक भगवान बुद्ध है। भगवान बुद्ध के महानिर्वाण के अगले पाँच शताब्धियों में बौद्ध धर्म पूरे भारतीय उपमहाद्विप में व्याप्त हुआ पिछले हजार-दो हजार वर्षो में मध्य, पूर्वी और दक्षिण पूर्वी, जम्बू महाद्विप में विस्तरित हुआ। बौद्धधर्म में चार संप्रदाय है हीनयान, महायान, ब्रजयान और नवयान लेकिन धर्म एक ही रहा है। सभी बौद्ध संप्रदायवाले भगवान के सिद्धांतो का अनुसरण करते है। यह धर्म विश्व का सबसे बड़ा चौथा धर्म रहा है। विश्व में करीबन 58 करोड़ लोग बौद्धधर्म के अनुयायी है। जो विश्व की आबादी का सातवाँ भाग कह सकते हैं। विश्व के अनेक देशों में इस धर्म के अनुयायी और बौद्ध विचार-धारा व्याप्त है । जैसे कि- चीन, जापान, वियतनाम, भूतान, कम्बोडिया, थाईलेंड, म्यानमार, श्रीलंका, मंगोलिया, तिब्बत, लाओस, ताइवान, मकाउ, सिंगापुर, दक्षिण कोरिया तथा उत्तर कोरिया आदि कुल मिलाकर 18 देशों में बौद्ध धर्म प्रमुख धर्म रहा है। भारत, नेपाल, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, रूस, ब्रुनेई, मलेशिया आदि देशों में भी स्थानीय धर्म के अलावा लाखों बौद्ध अनुयायी है।

बौद्धधर्म का मार्ग :-

बौद्धधर्म को अपने जन्मकाल से ही ईश्वरवाद, पुरोहितवाद, धार्मिक पाखंडवाद, कट्टरवाद से मुकाबला करना पड़ा है। आज भी वही स्थिति में संघर्षरत है। फिर भी संसार के तमाम लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति आज भी बौद्ध धर्म में रही है। बौद्धधर्म की करूणा, अहिंसा, शांति समानता, भातृत्व, व्यक्ति की स्वतंत्रता, विचारों की स्वतंत्रता और मानवता इत्यादि तत्व महामानव की ओर ले जाते है । भारत में अनेक धर्म के शासनाधिकारीयोंने शासन किया है। यह बात सर्व विदित है। मुस्लिम शासन काल में बौद्धधर्म पूर्णतः समाप्त नहीं हुआ, हिंदु काल में भी भारत में बौद्धधर्म को कोई हानि नहीं पहुँची और अंग्रेज शासन काल, वर्तमानकाल अर्थात अनेकों शासनकाल में बौद्धधर्म बरकरार रहा है। इसका प्रमुख कारण है बौद्धधर्म का स्वच्छ मार्ग, सत्य और अहिंसा का मार्ग। भगवान बुद्ध दिव्य आत्यात्मिक विभूतिने इस धर्म के आठ सिद्धांत बताए है। जो विश्व के बौध्ध अनुयायी मानते पालन करते है। बौद्धधर्म के मतानुसार चौथे आर्य सत्य का आर्य अष्टांग मार्ग है। जो दु:ख निरोध पाने का रास्ता है। गौतम बुद्ध ने कहा है कि चार आर्य सत्य की सत्यता का निश्चय करने के लिए इस मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।

1. सम्यक दृष्टि - चार आर्य सत्य में विश्वास करना।
2. सम्यक संकल्प - मानसिक और नैतिक विकास करना।
3. सम्यक वाक - हानिकारक बातें और झूठ न बोलना।
4. सम्यक कर्म - हानिकारक कर्मो को न करना।
5. सम्यक जीविका - कोई भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हानिकारक व्यापार न करना।
6. सम्यक प्रयास - अपने आप सुधर ने की कोशिश करना।
7. सम्यक स्मृति - स्पष्ट ज्ञान से देखने की मानसिक योग्यता पाने की कोशिश करना।
8. सम्यक समाधि - निर्वाण पाना और स्वयं का गायब होना।

धर्म में आगे बढ़ने के लिए पिछले स्तर को पाना अति आवश्यक है और कुछ लोग को लगता है कि इस मार्ग के स्तर सब साथ-साथ पाए जाते है। इस मार्ग को तीन भागों में विभाजित किया गया है, जैसे- पक्ष, शील और समाधि।

भगवान बुद्ध के अनुसार धर्म जीवन की पवित्रता बनाए रखना और पूर्णता प्राप्त करना है। साथ ही, निर्वाण प्राप्त करना और तृष्णा का त्याग करना है। इसके अलावा भगवान बुद्ध ने सभी संस्कार को अनित्य बताया है। भगवान बुद्ध ने मानव के कर्म को नैतिक संस्थान का आधार बताया है। बुद्ध के मतानुसार धर्म वही है, जो ज्ञान के द्वार को खोल दे और इससे आगे कहा है कि केवल विद्वान होना पर्याप्त नहीं है। विद्वान वही है जो अपने ज्ञान की रोशनी से सबको प्रकाशित कर दे। धर्म को लोगों की जिंदगी से जोड़ते हुए कहा है कि करूणाशील और मैत्री अनिवार्य है। भगवान बुद्धने सामाजिक भेदभाव मिटाने के लिए कहा था कि लोगों का परिचय जन्म के आधार पर नहीं कर्म के आधार पर होना चाहिए। इस मार्ग पर दुनिया के लाखों और करोड़ो लोग मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं और अपने मानव जीवन को सार्थक सफल बना रहे है। ऐसे सुंदर मार्ग बताने के बावजूद भगवान बुद्ध ने कभी अपने-आपको ईश्वर नहीं बताया। शायद इसीलिए डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर बौद्धधर्म के प्रति ज्यादा आकर्षित हुए और बौद्धधर्म अंगीकार किया।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर :-

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का जीवन अविरत संघर्ष का रहा है। जब वे 6 साल के थे उससे लेकर मृत्यु तक संघर्षशील कभी अपनी वेदना तो कभी समाज की पीड़ा परंतु खुद से ज्यादा समाज की चिंता में चिंतित रहे है। भगवान बुद्ध के सिद्धांतों के अनुसार उनकी धर्म प्रेरणा मानवीय समानता पर आधारित है । डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आधुनिक भारत को एक बौद्ध भारत का निर्माण करना चाहा । सन् 1950 के दशक में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर बौद्धधर्म के प्रति आकर्षित हुए और बौद्ध भिक्षुओं एवम् विद्वानों ने एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए श्रीलंका गए । पूणे के पास एक नये बौद्ध विहार के प्रति आकर्षित होकर घोषणा की, मैं बौद्धधर्म पर धर्म पुस्तक लिख रहा हूँ। अर्थात् औपचारिक रूप से बौद्ध धर्म अंगीकार की घोषणा की।

1954 में वे म्यानमार का दो बार दौरा किया। दूसरी बार रगूंन में, तीसरे विश्व बौद्ध फेलोशिप के सम्मेलन में भाग लेने के लिए गए। 1955 में भारतीय बौद्ध महासभा या बुद्धिस्ट सोसायटी ऑफ इंटिया की स्थापना की। उन्होंने अंतिम महान ग्रंथ 'द बुद्ध हिज़ धम्म' को 1956 में पुरा किया। 14 अक्तूबर 1956 को नागपुर में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने खुद स्वयं अपने समर्थको के लिए एक औपचारिक सार्वजनिक समारोह का आयोजन किया। इसके बाद श्रीलंका के एक महान बौद्ध भिक्षु महत्यवीर चंद्रमणी से पारंपरिक तरीके से त्रिरत्न ग्रहण कर और पंचशील को अपनाते हुए बौद्धधर्म अंगीकार किया। पहले दिन करीबन पाँच लाख समर्थकों ने बौद्धधर्म अंगीकार किया। नवयान लेकर बाबासाहेब और समर्थकों ने विषमतावादी हिंदु धर्म एवं हिंदु दर्शन की निंदा की और उसका त्याग किया। जिस धर्म में भेदभाव है वो धर्म किस काम का ? डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने दूसरे दिन 15 अक्तूबर को नागपुर में दो लाख अनुयायीओं को बौद्धधर्म की दीक्षा दी। तीसरे दिन 16 अक्तूबर को डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर चंद्रपुर गए और वहाँ उन्होंने तीन दिवस में दश लाख लोगों ने बौद्ध धर्म को अपनाया । इस परिवर्तनवादी घटना से विश्व के बौद्ध देशों से खूब अभिनंदन की वर्षा हुई। फिर बाद में नेपाल चतुर्थ विश्व बौद्ध सम्मेलन में काठमंडू गए। उन्होंने अपनी अंतिम पांडुलिपि बुद्ध या कार्ल मार्कस को दो दिसम्बर 1956 को अपने अनुयायियों के लिए 22 प्रतिज्ञाएँ निर्धारित की जो बौद्धधर्म का एक सार दर्शन है। तीन दिन में एक साथ दश लाख लोग बौद्धधर्म अंगीकार करे यह घटना ऐतिहासिक है क्योंकि विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक रूपातरण था। उन्होंने इन शपथों को निर्धारित किया जिससे हिंदु धर्म के बंधनों को पूरी तरह पृथक किया जा सके। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा दी गई इन 22 प्रतिज्ञाएँ हिंदू मान्यताओं और पद्धतियों की जड़ो पर गहरा आघात करती है। जिसमें मात्र हिंदुओं को उँची जातियों के संवर्धन के लिए मार्ग प्रशस्त किया गया है उसमें व्याप्त अंधविश्वासों, व्यार्थ और अर्थहीन रिवाजों से धर्मांतरित होते समय स्वतंत्र रहा जा सकता है। यह प्रतिज्ञा बौद्ध धर्म का अंग बन गयी है। जिसमें पंचशील, मध्यम मार्ग, अनुश्वरवाद, दश पारमिता, बुद्ध-धर्म संघ के त्रिरत्न प्रज्ञा, शील, करूणा, समता आदि बौद्धधर्म तत्व मानवी मूल्य एवं विज्ञानवाद है। शायद इसीलिए डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर को बौद्धधर्म ने ज्यादा आकर्षित किया। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की वजह से आधुनिक मानवीय मूल्यों की दृष्टि से बहुत सारी बातें भारतीय संविधान में सम्मिलित है यह सबसे बड़ी विशेषता है। आधुनिक भारत में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने बुद्धिज्म को स्थापित करने में अहम् भूमिका निभायी । दुनिया के सभी धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रो के लिए और मानवतावादी राष्ट्रीय समाजों के लिए भारत का संविधान एक बहुत ही आदर्श संविधान बन गया।

अत: डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों को एक शोधप्रत्र में समेटना आसान नहीं है। क्योंकि डॉ. बाबासाहेब और बौद्धधर्म विचारधारा का विस्तृत फलक हैं। उनका जीवन संघर्ष भी बड़ा लम्बा जीवन संघर्ष रहा है। वे जन्म से महापुरुष नहीं

बने थे। परंतु निरंतर जीवन संघर्ष के कारण वे समाज में एक महापुरुष, महामानव बने। करोड़ो दलितों, शोषितों, पीडितों की जीवन नैया बनकर आस्था के पात्र बन गए। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर राजनैतिक क्रांतिकारी नहीं थे बल्कि वे एक सामाजिक, सांस्कृतिक क्रांतिकारी रहे और रहेंगे।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर दुनिया के उन महान हस्तियों में से थे जिन पर दुनिया के लोगों को गर्व, अभिमान, नाज भी है। सही मायने में वे युगपुरुष थे। सही अर्थो में सामाजिक क्रांति के यौद्धा मूकनायक,महानायक, बुद्ध पुरुष थे। जिन्होंने बौद्धधर्म का प्रचार-प्रसार किया। बौद्धधर्म के मार्ग को लोगों और दुनिया को सरल सहज बनाकर दिया । उनका चिंतन, दर्शन का लक्ष्य शोषण, उत्पीडन से मुक्त तथा धर्मवाद से मुक्त मानव समाज का निर्माण करना उनकी ऐसी विचार धारा मानवी को सतत प्रवाही बनाती है। ऐसे युग पुरूष दलितों के समीहा को कोटी-कोटी वंदन ।

सहायक ग्रंथ

1. डॉ. बाबासाहेब और उनका चिंतन, डॉ. विमल कीर्ति ,लता साहित्य सदन, गाजियाबाद, प्र.सं. 2011
2. डॉ. बी.आर.आम्बेडकर, 15 अक्तूबर, 1956 का नागपुर में दिया गया भाषण।
3. डॉ.भीमराव आंबेडकर एक समाज सुधारक, डॉ. रमेश एच. मकवाणा, पार्श्व पब्लिकेशन अहमदाबाद, आवृति, 2011
4. आंबेडकर विचार, संपादक, प्रवीण गढवी और अन्य आसव लोक, अहमदाबाद, प्र. सं. 2017